

Living the Lotus 4

Buddhism in Everyday Life

2026
VOL. 247



The Brazil Dharma Center Welcomes Rev. Takashi Maeda, Director of Rissho Kosei-kai International, on March 22

Living the Lotus
Vol. 247 (April 2026)

Senior Editor: Takashi Maeda
Editor: Sachi Mikawa
Copy Editor: Parmita Shekhar, Prakash Kumar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124 FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेंट निचिको निवानो का दिशानिर्देश, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

वायलेट जितना छोटा एक व्यक्ति

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ



सोसेकी की कविता और शाक्यमुनि की जन्म घोषणा

1897 में, उपन्यासकार सोसेकी नात्सुमे ने अपने करीबी दोस्त, शिकी मासाओका को यह हाइकू भेजा: “वायलेट जितना छोटा जन्म, / कितना विनम्र व्यक्ति।” हालाँकि यह कविता पहले चीन-जापान युद्ध (1894–95) में जापान की जीत के कुछ ही समय बाद लिखी गई थी—जब देश एक आधुनिक राष्ट्र बनने की ओर बढ़ रहा था और चारों ओर उत्साह का माहौल था, फिर भी इस कविता से सोसेकी की ओर से उदासी जैसी कोई भावना झलकती है।

लोगों के लिए अपने व्यक्तित्व को महत्व देना और गर्व के साथ जीना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, इसे गलत समझने से अहंकार पैदा हो सकता है—जैसे कि खुद पर बहुत ज़्यादा गर्व करना या दूसरों को डराना-धमकाना—और कभी-कभी तो यह लोगों के बीच एक खतरनाक सोच भी फैला सकता है कि युद्ध करना स्वीकार्य है। इस वास्तविकता का सामना करते हुए, मुझे लगता है कि सोसेकी की कविता में एक ऐसी इच्छा छिपी है—कि वे सड़क के किनारे खिलने वाले उस 'वायलेट' फूल की तरह बनें, जो चुपचाप खिलता है, पूरी जीवंतता के साथ जीता है, लेकिन किसी की नज़र में आए बिना; और जिसकी मौजूदगी उन लोगों के मन को सुकून और शांति देती है, जिनकी नज़र उस पर पड़ती है।

शाक्यमुनि के जन्म का उत्सव 8 अप्रैल को मनाया जाएगा, जब हम एक बार फिर उनके जन्म के समय की घोषणा के अर्थ पर विचार करेंगे—“स्वर्ग और पृथ्वी पर, केवल मैं ही सम्मानित हूँ”—कहा जाता है कि उन्होंने ये शब्द अपने जन्म के तुरंत बाद कहे थे। इस घोषणा की व्याख्या इस रूप में की जा सकती है कि यह हमें विनम्रता और आत्मनिरीक्षण के महत्व की शिक्षा देती है, जो सोसेकी की कविता की भावनाओं के अनुरूप है—साथ ही, यह स्वयं और दूसरों के प्रति सच्चे सम्मान का भाव भी जगाती है।

इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति की ज़िंदगी कीमती और अनोखी होती है। जब हमें इस बात का एहसास होता है, तो हम समझ जाते हैं कि बेतहाशा बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागना, या दूसरों से बहस और लड़ाई-झगड़ा करना कितनी बड़ी बेवकूफी है। साथ ही, स्वयं का और दूसरों का सम्मान करके—यानी, सबके साथ तालमेल बिठाकर जीने से—हम इंसान के रूप में जन्म लेने का सही मतलब बेहतर ढंग से समझ पाते हैं, और यह भी कि हमें यह क्यों सिखाया जाता है कि कृतज्ञता और करुणा की भावना किसी भी दूसरी चीज़ से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।



“बड़ी हस्ती” बनने की कोशिश करने और एक आत्म-संतुष्ट जीवन शैली जीने के बजाय, हम कहीं ज़्यादा खुश होंगे, उदाहरण के लिए, अगर हम दूसरे लोगों के मन को शांति दें और अपने आस-पास सद्भाव का माहौल बनाएँ, भले ही हम खुद कितने भी साधारण या “छोटे लोग” क्यों न हों।

जन्म लेने का अर्थ

सोसेकी ने वायलेट को चुना, लेकिन आप किस तरह का फूल बनना पसंद करेंगे?

इस मौसम में, मैग्नोलिया, चेरी ब्लॉसम और डंडेलियन के फूल बेहद प्यारे लगते हैं, और डैफनी की झाड़ियों को उनकी मनमोहक खुशबू के लिए सराहा जाता है। किसी ने एक बार कहा था कि “फूलों की सुंदरता की कोई रैंकिंग नहीं होती,” और सचमुच, उनमें कोई भेदभाव नहीं होता—जैसे कि कोई श्रेष्ठ है, कोई हीन, कोई सुंदर है या कोई बदसूरत—क्योंकि हर तरह का फूल अपनी पूरी क्षमता से खिलकर अपना योगदान देता है।

दार्शनिक कितारो निशिदा (1870–1945) ने बिल्कुल सही कहा था, “ठीक वैसे ही जैसे फूल तब सबसे सुंदर होते हैं जब वे अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट करते हैं, मनुष्य भी अपनी सुंदरता के शिखर पर तब पहुँचते हैं जब वे अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट करते हैं।”

हम में से जो लोग बुद्ध की शिक्षाओं का अध्ययन करते हैं और उनके अनुसार अपना जीवन जीते हैं, उनके लिए सच्चा मानवीय स्वभाव बुद्ध प्रकृति के अलावा और कुछ नहीं है; और जब हम सभी इस बात को आत्मसात कर लेंगे और अपने बुद्ध प्रकृति को प्रकट करेंगे, तो हमारा जीवन फूलों जैसा खिल उठेगा, और हम अपनी भूमिका को अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार निभा रहे होंगे। इसी में मनुष्य के रूप में जन्म लेने का महान अर्थ निहित है।

हालाँकि, जिस समय हमें जीवन के अर्थ का बोध होता है, वह हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होता है, और विशेष रूप से युवाओं को न तो अधीर होना चाहिए और न ही निराशावादी।

मेरी पसंदीदा बौद्ध कविताओं में से एक के अनुसार: “इस दुनिया में, / जैसे भी जी सको, जियो, / बस अपने मन को अच्छाई पर केंद्रित रखने के प्रति सच्चे रहो” (साज़ेन सेक्केई)।

इस कविता का अर्थ है कि आपको अपने मन को शांत रखना चाहिए; अपनी इच्छाओं, चिंताओं और गुस्से को कम करना चाहिए; और हमेशा अपने प्रति सच्चे रहना चाहिए।

हमें इस रवैये को बनाए रखना चाहिए और दूसरों को प्राथमिकता देना कभी नहीं भूलना चाहिए, विशेष रूप से ऐसे दौर में, जब चिंता और असंतोष बढ़ रहा है। ऐसा करने से हम सभी एक अद्वितीय व्यक्ति के रूप में शानदार ढंग से खिल उठेंगे।

कोसेइ, अप्रैल 2026



मैं बुद्ध के ज्ञान और करुणा को अनेक लोगों के साथ साझा करना चाहता हूँ।

श्री निकोला टिनी, रिश्शो कोसेई-काई रोम, इटली

आपको सबसे पहले रिश्शो कोसेई-काई की शिक्षाओं के बारे में कब और कैसे पता चला?

मेरा जन्म 1972 में रोम में हुआ था, और लगभग अठारह साल की उम्र तक धर्म में मेरी बिल्कुल भी कोई दिलचस्पी नहीं थी। हालाँकि, विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान, मैंने पूर्वी आध्यात्मिकता पर एक क्लास ली थी, और मैंने भारत, चीन और जापान में बौद्ध धर्म के बारे में सीखा। वह पहली बार था जब मैंने बुद्ध के बारे में सुना। प्रारंभ में मैं समझता था कि वह ईसाईयों के ईश्वर जैसा है, परन्तु बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि मेरी समझ पूरी तरह से मिथ्या थी। तब से, बौद्ध धर्म में मेरी गहरी रुचि जागृत हो गई। जब मैं विभिन्न बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन कर रहा था, तब मुझे पता चला कि तेरहवीं शताब्दी में जापान में एक महान बौद्ध भिक्षु हुए थे, जिनका नाम निचिरेन था। मैंने जाना कि निचिरेन ने पूरा जीवन अटूट साहस और दृढ़ संकल्प के साथ सद्धर्मपुंडरीक सूत्र (लोटस सूत्र) के उपदेशों को फैलाने में समर्पित कर दिया। इससे मैं पूर्ण रूप से लोटस सूत्र की गहराई में मोहित हो गया।

बाद में, मैंने रोम स्थित जापानी सांस्कृतिक संस्थान की पुस्तकालय में एक अंग्रेजी भाषा की पुस्तक देखी, जिसका शीर्षक था — रिश्शो कोसेई-काई (कोसेई पब्लिशिंग कंपनी, 1966)। इस पुस्तक में रिश्शो कोसेई काई के फाउंडर, संगठन का इतिहास, इसके मुख्य धर्मग्रंथ त्रिविध सद्धर्मपुंडरीक सूत्र, नवनिर्मित ग्रेड सेक्रेड हॉल, भक्ति का केंद्र, होजा या “धर्म चक्र”, तथा ओएशिकी महोत्सव की व्याख्या शामिल थी। इसमें फाउंडर निकक्यो निवानो की एक तस्वीर भी शामिल थी, जिसमें वे दूसरे वेटिकन काउंसिल के दौरान परम पावन पोप पॉल VI से भेंट कर रहे थे। उस पुस्तक की विषय-वस्तु से गहराई से प्रभावित होकर, मैंने तुरंत जापान स्थित रिश्शो कोसेई-काई के मुख्यालय को एक पत्र लिखा, जिसका पता पुस्तक के अंत में दिया गया था। लगभग दो हफ्तों बाद, मुझे जवाब मिला, और मैंने उस पत्र को बड़े ही भावुकता और आनंद के साथ पढ़ा। इसमें रिश्शो कोसेई-काई के एक सदस्य का नाम और फ़ोन नंबर था, जो रोम के एक विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहा था। वह व्यक्ति रेव. कोइची कवामोतो थे, जो अब सुगिनामी धर्म केंद्र के मिनिस्टर हैं और साथ ही टोक्यो क्षेत्र के डायरेक्टर के रूप में भी सेवा कर रहे हैं। मुझे लगता है कि वह लगभग 1992 का समय था।



श्रीमान निकोला टिनी

तो, उस एक किताब ने ही आपको बुद्ध की शिक्षाओं तक पहुँचाया, है ना?

उसके बाद, रेव. कावामोतो कृपापूर्वक कई बार मेरे घर पर पधारे। उन्होंने बौद्ध धर्म, सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र (लोटस सूत्र) तथा रिश्शो कोसेई-काई के उपदेशों को उत्साहपूर्वक और आसानी से समझ आने वाले तरीके से न केवल मुझे, बल्कि मेरे परिवार और मेरे मित्रों को भी समझाया। रोम में एक छोटा लेकिन अद्भुत संघ का जन्म हुआ। रेव. कावामोतो हमारे लिए एक बहुत महत्वपूर्ण लीडर थे, और वे ऐसे व्यक्ति थे जिन पर हम वास्तव में भरोसा कर सकते थे। किन्तु, जब रोम में उनकी पढ़ाई समाप्त हुई, तो उन्हें एक नया मिशन पूरा करने के लिए जापान लौटना पड़ा। जब मैं युवा था, उस समय अपनी बीस वर्ष की आयु में, मैं चिंतित रहता था कि रोम में, जहाँ कोई मार्गदर्शक या लीडर नहीं था, मुझे कैसे अभ्यास करना चाहिए और कैसे आगे बढ़ना चाहिए। फिर कुछ समय बाद, मैंने भिक्षु होने का दृढ़ संकल्प किया। सन् 1998 से मैंने गृहस्थ उपासक के रूप में धार्मिक तपस्या में अपने आपको समर्पित किया, और अगले वर्ष मैंने विधिवत भिक्षु की दीक्षा ग्रहण की। किन्तु, चार वर्षों तक भिक्षु बनकर प्रशिक्षण लेने के पश्चात्, मैंने यह दृढ़ निश्चय किया कि मुझे

उपासक के रूप में ही धर्म-साधना करनी चाहिए। मैं रिश्शो कोसेई-काई के गृहस्थ बौद्ध संघ में सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र (लोटस सूत्र) का मेहनत से अध्ययन और अभ्यास करना चाहता हूँ। 2003 में मैंने गृहस्थ जीवन अपनाया और रिश्शो कोसेई-काई के एक सदस्य के रूप में अपनी बौद्ध साधना को निरंतर आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। दस वर्ष बाद, सन् 2013 में, रिश्शो कोसेई-काई का रोम केंद्र खुला और रेव. कात्सुतोशी मिजुमो (वर्तमान में हमाकिता धर्म केंद्र के मिनिस्टर) को डायरेक्टर नियुक्त किया गया, जो हमारे नए अभ्यास की शुरुआत का प्रतीक बना।

पिछले अक्टूबर, आप रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल में अनुवाद की बैठक में भाग लेने के लिए जापान गए थे। रिश्शो कोसेई-काई की किन प्रकाशनों का आप वर्तमान में अनुवाद कर रहे हैं?

रोम केंद्र के उद्घाटन के पश्चात, मैंने शीघ्र ही अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध त्रिविध सद्धर्मपुंडरिक सूत्र का इतालवी भाषा में अनुवाद आरंभ कर दिया। साथ ही, मैंने फाउंडर निवानो निकक्यो द्वारा लिखित त्रिविध सद्धर्मपुंडरिक सूत्र पर दस खंडों में व्याख्या तथा *आज के परिपेक्ष्य में बौद्ध धर्म* पर कार्य प्रारंभ किया, साथ ही प्रेसिडेंट निवानो निचिको की *बौद्ध हृदय का संवर्धन* पर भी कार्य किया। मैं 'लिविंग द लोटस' के लिए संस्थापक के निबंधों और प्रेसिडेंट के मासिक संदेशों का भी अनुवाद कर रहा हूँ। हालाँकि, अनुवाद का कार्य अत्यंत एकाग्रता और धैर्य की मांग करता है, जिसके कारण मुझे अक्सर गहन मानसिक तनाव का अनुभव होता था। मैंने अकेलेपन के साथ संघर्ष का भी अनुभव किया है। उन कठिन समय में, रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल के सदस्यों ने ईमेल और ऑनलाइन होज़ा के माध्यम से मुझे प्रोत्साहित किया और सहारा दिया, जिससे मैं उन कठिनाइयों को पार कर सका।



अक्टूबर 2025 में टोक्यो स्थित हेडक्वार्टर की अपनी यात्रा के दौरान श्री टिनी और रोम होज़ा के एक सदस्य (बाएँ)। दाईं ओर, रेव. कोइची कावामोतो, टोक्यो क्षेत्र के डायरेक्टर।



श्री टिनी (पीछे की पंक्ति, मध्य में) हमाकिता धर्म केंद्र के उन सदस्यों के साथ, जिन्होंने 12 अक्टूबर, 2025 को 'संस्थापक के जन्मस्थान महोत्सव' में भाग लिया।

इस वर्ष, उनके दीर्घकालिक सहयोग और सतत समर्थन के फलस्वरूप, त्रिविध सद्धर्मपुंडरिक सूत्र का हमारा बहुप्रतीक्षित इतालवी अनुवाद अंततः प्रकाशित होगा। इसके अतिरिक्त, हम कृतज्ञ हैं कि प्रेसिडेंट निवानो कृपापूर्वक प्रस्तावना प्रदान करेंगे।

सद्धर्मपुंडरिक में कई कठिन शब्दावली हैं, और हम कल्पना कर सकते हैं कि इसके गहन उपदेशों का अनुवाद करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण रहा होगा। इस प्रक्रिया में आपने किन-किन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा?

मैंने बड़ी सतर्कता और विचारपूर्वक सबसे उचित इतालवी अभिव्यक्तियों का चयन किया, ताकि हर एक शब्द का अर्थ सही-सही, पूर्ण रूप से और बिना किसी कमी के व्यक्त हो जाए।" यह बात किसी भी प्रकार के पाठ के अनुवाद पर लागू होती है, किन्तु विशेष रूप से त्रिविध सद्धर्मपुंडरिक सूत्र के अनुवाद पर। इसके अलावा, मैंने गलतफहमी पैदा करने वाली अभिव्यक्तियों की सावधानीपूर्वक समीक्षा की और शब्दों तथा वाक्यांशों का चयन बड़े ध्यान एवं सतर्कता से किया। सबसे ऊपर यह कि, चूँकि यह पुस्तक विद्वानों के लिए नहीं लिखी गई है, इसलिए मैंने अनुवाद को यथासंभव सरल भाषा में तैयार करने का प्रयास किया है, ताकि यह केवल रिश्शो कोसेई-काई के सदस्यों तक ही सीमित नहीं हो बल्कि यह सामान्य जनता के लिए आसानी से समझ आने योग्य हो। मैंने उस अनुवाद का लक्ष्य रखा है कि जिसमें सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र को दैनिक जीवन में जीवंत उपदेश के रूप में अभ्यास किया जा सके।" रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल के

Interview

कर्मचारियों के साथ मेरी कई चर्चाएँ हुईं, जिससे यह अनुवाद बुद्ध की वास्तविक अभिप्राय और संस्थापक निक्क्यो निवानो के हृदय के अनुरूप हो सके।" मेरे लिए, अनुवाद की प्रक्रिया सद्धर्मपुंडरिक सूत्र के माध्यम से की जाने वाली एक अद्भुत यात्रा जैसी प्रतीत होती है।

जापान में अपने निवास के दौरान, आपको तरह-तरह के अनुभव हुए, है ना?

अनुवाद की बैठक निश्चित रूप से मेरी यात्रा का एक प्रमुख उद्देश्य थी, किंतु जापान में लगभग तीन सप्ताह के दौरान मुझे जो विविध अनुभव हुए, वे एक अनमोल तीर्थयात्रा की भाँति लगते हैं, जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा। मेरे निवास के दौरान, मैंने यामानाशी प्रान्त स्थित मिनोबुसान कुओनजी का यात्रा किया, जो निचिरेन शू सम्प्रदाय का प्रधान महाविहार है। मैंने शिजुओका प्रांत में हमाकिता धर्म केंद्र में रात भर ठहरने का भी अनुभव किया; निगाता प्रांत के तोकामाची शहर में फाउंडर के जन्मस्थान उत्सव में हिस्सा लिया; तथा टोक्यो के सुगिनामी धर्म केंद्र में वापस आकर लोगों को धर्म से जोड़ने वाले कार्य (तेदोरी), होजा और स्मृति सेवाओं में संलग्न हुआ। सुगिनामी धर्म केंद्र के सदस्यों के साथ हेडक्वार्टर के 'ओएशिकी इचिजो उत्सव' की शोभायात्रा में शामिल होकर अपनी तीर्थयात्रा को संपन्न करने के लिए मैं सचमुच कृतज्ञ हूँ। मेरा इरादा है कि मैंने हेडक्वार्टर में धर्म-साधना से जो कुछ भी सीखा, और जापानी सदस्यों के साथ मेरे जो अनुभव रहे, उन्हें इटली के संघ के साथ साझा करूँ।

क्या आप सद्धर्मपुंडरिक सूत्र का कोई ऐसा अंश या शिक्षा साझा कर सकते हैं, जिसे आप हमेशा ध्यान में रखते हैं?

सद्धर्मपुंडरिक सूत्र के प्रत्येक अध्याय अत्यंत अद्भुत हैं, और उनमें अनेक गहन प्रेरणादायी उपदेश हैं। किंतु, जिन्हें मैंने हाल ही में अपने हृदय में सबसे गहराई से अंकित किया है, वह है अध्याय 21, "तथागत की अलौकिक शक्तियाँ"। यह अध्याय अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसमें बुद्ध पृथ्वी से प्रकट होने वाले बोधिसत्वों को, विशेष रूप से बोधिसत्व विशिष्ट चरित्र सहित अन्य बोधिसत्वों को सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र के प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण मिशन सौंपने के लिए जाना जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि बुद्ध का संदेश सीधे उन लोगों को संबोधित है जो आज के इस युग में जी रहे हैं। चाहे जापान हो, इटली हो, फ्रांस हो, स्पेन हो, या विश्व के किसी भी कोने में, मुझे लगता है कि बुद्ध हमें प्रोत्साहन का संदेश भेज रहे हैं: जहाँ भी आप हैं, वहीं पर सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र के शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए सतत और दृढ़ प्रयास करें। इस दृष्टि से, अब यह अध्याय मेरे लिए अत्यंत प्रिय है।

अंत में, क्या आप अपनी सबसे बड़ी मौजूदा इच्छा और भविष्य के लिए अपना सपना साझा कर सकते हैं?

दुर्भाग्यवश, युद्ध अभी भी यूक्रेन और फिलिस्तीन में तबाही मचा रहा है, और दुनिया में एक अराजक स्थिति बनी हुई है, जिसकी पहचान बढ़ते विभाजन और टकराव से होती है। एक बार सह-संस्थापक म्योको नागनूमा के माध्यम से एक दिव्य प्रेरणा प्राप्त हुई थी कि, "सद्धर्मपुंडरिक सूत्र का सत्य और उसकी भावना, रिश्शो कोसेई-काई के कार्यों के ज़रिए पूरे विश्व में फैलेगी। मुझे आज यह गहराई से अनुभव हो रहा है कि अब रिश्शो कोसेई-काई के लिए वह समय आ गया है जब उसे अपने मिशन सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र की शिक्षाओं को सम्पूर्ण विश्व में फैलाना। इसी भावना के साथ, इस समय मैं सबसे अधिक जिसकी कामना करता हूँ, वह है रोम और उसके आस-पास क्षेत्र में सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का प्रचार करना तथा रिश्शो कोसेई-काई संघ की एकता, विकास और उन्नति को मजबूत करना है। इसका अर्थ इससे कम कुछ नहीं है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति बुद्ध की प्रज्ञा और करुणा को प्राप्त करे तथा इन शिक्षाओं को और भी अधिक लोगों के साथ साझा करे। यद्यपि यह आदर्श बहुत विशाल है, फिर भी मेरा सपना है कि मैं रोम में मिनिस्टर के रूप में सेवा करूँ। इसे साकार करने के लिए, मैं सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का अध्ययन और अपने दैनिक अभ्यास में पहले से भी अधिक निष्ठापूर्वक साधना करने का संकल्प करता हूँ। संघ के सदस्यों के साथ मिलकर मैं प्रचार कार्य में प्रयासरत रहूँगा और अनेक इटली के लोगों को सुख-शांति की ओर मार्गदर्शन करूँगा।



श्री टिनी (दाई ओर से चौथे) रोम होजा के सदस्यों के साथ।

即是道場

धर्म का अभ्यास अभी और यहीं



दस सत्यताएँ: कारण और स्थिति

पिछले महीने से जारी रखते हुए, हमें रिश्शो कोसेइ काइ के इंटरनेशनल एडवाइजर डॉ. डोमिनिक स्कारंगेलो की 'प्रेक्टिसिंग द धर्म इन द हियर एंड नाउ' की अगली किस्त शेयर करते हुए खुशी हो रही है। सोकुजे दोजो पुण्डरीक सूत्र के चैप्टर 21 से प्रेरित है और "मेडिटेशन ऑन द प्लेस ऑफ द वे" का प्रिंसिपल बताता है—यह समझ कि कोई भी जगह प्रैक्टिस की जगह हो सकती है। यह टीचिंग हमें प्यार से याद दिलाती है कि हम अपनी रोजमर्रा की ज़िंदगी में धर्म को जी सकते हैं—चाहे घर पर, काम पर, या स्कूल में।



डॉ. डोमिनिक स्कारंगेलो

इस बार, हम "ऐसे कारण" और "ऐसी स्थिति" पर विचार करेंगे, और यह भी समझेंगे कि हमारे दैनिक जीवन में मार्ग पर चलने के लिए इन्हें समझना क्यों आवश्यक है।

मार्च में, हमने यह सीखा कि हमारे व्यवहार का मूल कारण हमारे अपने भीतर ही निहित है—अर्थात् हमारे मन की प्रवृत्ति (यानी हमारा स्वभाव)। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम इस बात को भली-भांति समझें। अपने दैनिक जीवन में, हमारा सामना अनगिनत वस्तुओं और परिस्थितियों से होता है; और इनमें से प्रत्येक वस्तु या परिस्थिति एक ऐसी दशा बन जाती है, जिसके माध्यम से मन की प्रवृत्ति से उत्पन्न होने वाली शक्ति (यानी उसकी अंतर्निहित क्षमता) एक ठोस क्रिया (यानी कार्य-रूप) के रूप में प्रकट होती है। ये क्रियाएँ, बदले में, ऐसे कारण बन जाती हैं जो इस संसार में विभिन्न परिणामों को जन्म देती हैं।

कभी-कभी लोग इस बात का गलत मतलब निकाल लेते हैं कि "कारण हमारे अपने भीतर ही है"—वे इसे इस दावे के तौर पर समझते हैं कि जिन परिस्थितियों का हम सामना करते हैं, वे हमारे जीवन पर कोई असर नहीं डालतीं या हमारे विकल्पों को सीमित नहीं करतीं। बुद्ध की शिक्षा उन संरचनात्मक या सामाजिक-आर्थिक कारकों के अस्तित्व से इनकार नहीं करती, जो कठिन चुनौतियाँ पैदा करते हैं। फिर भी, जिन परिस्थितियों का हम सामना करते हैं—भले ही वे कितनी भी कठोर क्यों न हों—उनके प्रति प्रतिक्रिया देने के हमारे पास कई अलग-अलग तरीके मौजूद रहते हैं। प्रतिक्रिया देने के कुछ तरीके हमारे कष्टों को और गहरा कर देते हैं, जबकि कुछ अन्य उन्हें कम करते हैं और हमें मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

यह स्वीकार करना कि "कारण हमारे भीतर ही है," जीवन की कठिनाइयों के सामने निष्क्रियता नहीं है। बल्कि, ठीक इसके विपरीत है। यह हमें यह दिखाकर सशक्त बनाता है कि हमारे पास हमेशा कुछ करने की शक्ति होती है। हृदय की यह स्वतंत्रता हमारी "ऐसी प्रकृति" का ही एक पहलू है, जो स्वाभाविक रूप से हमें ऐसे तरीकों से कार्य करने की क्षमता प्रदान करती है, जिनसे हमें और दूसरों को—दोनों को ही—अधिक सुख प्राप्त होता है।

संस्थापक निवानो ने एक भीड़ भरी ट्रेन में बैठे एक लड़के के उदाहरण से "ऐसे कारण" और "ऐसी स्थिति" के मेल को समझाया। लड़के के दिल में मौजूद दयालुता (ऐसा स्वभाव) ही करुणापूर्ण कार्य (ऐसा कार्य) करने की क्षमता (ऐसी क्षमता) पैदा करती है। जब वह देखता है कि कोई कमज़ोर बुजुर्ग व्यक्ति खड़े होने में मुश्किल महसूस कर रहा है और वह तुरंत अपनी सीट उसे दे देता है, तो वह क्षमता एक ऐसे कार्य के रूप में सामने आती है जो दुनिया में सकारात्मक बदलाव का कारण बन जाता है।

रेवरेंड कोशो कभी-कभी किसी स्टोर में कोषाध्यक्ष चुनने का उदाहरण देते हैं। जब हमारे सामने कई खुले हुए रजिस्टर होते हैं, तो हम अक्सर उस रजिस्टर को चुनते हैं जहाँ सबसे ज़्यादा मिलनसार दिखने वाला कोषाध्यक्ष होता है। लेकिन अगर हमारा दिल लोगों को खुशी देने की बोधिसत्व जैसी इच्छा से भरा हो, तो हम एक अलग चुनाव करते हैं—हम उस कोषाध्यक्ष के पास जाते हैं जो दुखी दिख रहा हो। हम निश्चित तौर पर तो नहीं कह सकते, लेकिन जहाँ तक हमें पता है, हमारी दी हुई एक मुस्कान उस व्यक्ति के दिन के हालात, या शायद उसकी पूरी ज़िंदगी को ही बदल सकती है। पुण्डरीक सूत्र के दूसरे अध्याय, "उपाय कौशल्य" में यह सिखाया गया है कि देखने में छोटे लगने वाले नेक काम भी एक "तितली प्रभाव" पैदा कर सकते हैं—तूफ़ान लाकर नहीं, बल्कि ऐसे कारणों और परिस्थितियों की एक ऐसी



श्रृंखला स्थापित करके जो दुनिया को बेहतर बनाती है।

‘दस सत्यताएँ’ की भाषा में, इस तरह के बदलावों को “ऐसा परिणाम” और “ऐसा प्रतिफल” कहा जाता है। अगली बार हम इनके बारे में और विस्तार से चर्चा करेंगे। कौशल्य अंत में, मैं इस बात पर विचार करना चाहूँगा कि “ऐसे कारण” और “ऐसी स्थिति” के प्रति हमारी समझ का उपयोग, ‘कारण के सत्य’ का अभ्यास करने और हमारे दुखों की जड़ों को उजागर करने के लिए भी किस प्रकार किया जा सकता है।

एक बार, एक दोस्त ने बताया कि हालाँकि मैं आम तौर पर सब्र रखने वाला और जल्दी गुस्सा न करने वाला इंसान हूँ, लेकिन एक ऐसी स्थिति आई थी जब मैं एक बहुत ही छोटी सी बात पर आश्चर्यजनक रूप से क्रोधित हो गया था। मेरे साथ काम करने वाले एक सहकर्मी ने मुझसे बार-बार एक अनुवाद के बारे में पूछा, जिस पर मैं काम कर रहा था, जबकि उसे जमा करने में अभी कई हफ्ते बाकी थे। मुझे यह बात बेहद परेशान करने वाली लगी। “तुम नाराज क्यों हुए?” मेरे दोस्त ने पूछा। उस समय अपनी मन की स्थिति (ऐसी प्रकृति) पर विचार करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि मुझे लगा कि उस सहकर्मी को मुझ पर यह भरोसा नहीं था कि मैं वह काम पूरा कर पाऊँगा। मुझे उनका यह बर्ताव ऐसा लगा, जैसे वे मुझे एक अविश्वसनीय और भरोसे के लायक न समझने वाले इंसान के तौर पर आंक रहे हों।

मैंने अपने सहकर्मी के कामों का इतना गहरा मतलब क्यों निकाला? जब मैं उस भावना के साथ रहा और उसे और करीब से परखा, तो मुझे एहसास हुआ कि यह उस भावना की ही एक गूँज थी जिसे मैंने बचपन में महसूस किया था, जब मेरी ज़िंदगी के किसी बड़े ने

मुझे अक्षम और अविश्वसनीय कहकर नीचा दिखाया था। और ज़्यादा सोचने पर, मुझे समझ आया कि मैंने उस फैसले को अपने अंदर एक हमेशा रहने वाली बचाव की भावना के रूप में बसा लिया था। इसलिए अब जब भी मुझे लगता है कि दूसरे मुझ पर संदेह कर रहे हैं, तो मैं गुस्से के साथ जवाब देता हूँ।

हालाँकि मैं आमतौर पर सब्र रखने वाला इंसान हूँ, लेकिन मैंने पाया है कि मेरे अंदर भी गुस्सा करने की क्षमता मौजूद है। यह गुस्सा तब बाहर आता है, जब मैं किसी खास तरह की स्थिति का सामना करता हूँ—ऐसी स्थितियाँ जिनमें मुझे लगता है कि मुझ पर संदेह किया जा रहा है। ऐसी परिस्थितियाँ ही वह वजह बनती हैं, जिनसे यह छिपा हुआ गुस्सा बाहर आ जाता है, और फिर इससे झगड़े और तकलीफें पैदा होती हैं। इस सबका असली कारण असल में मेरे अपने अंदर ही है, और इस तकलीफ को दूर करने के लिए, मुझे अपने दिल में अतीत से जमा उस चोट और आत्म-सम्मान को पहुँची ठेस को समझना और सुलझाना होगा।

मैं यह अनुभव इसलिए साझा कर रहा हूँ, क्योंकि इसने मुझे सिखाया कि न केवल अपने कार्यों पर, बल्कि विभिन्न परिस्थितियों (जैसे कि यह परिस्थिति) के प्रति मेरी प्रतिक्रिया के तरीके पर भी ध्यान देकर, मैं ‘कारण के सत्य’ का अभ्यास कर सकता हूँ और यह समझ सकता हूँ कि मैं ऐसा महसूस और आचरण क्यों करता हूँ। दस सत्यताएँ केवल एक अमूर्त सिद्धांत नहीं हैं; वे पुण्डरीक सूत्र का वह माध्यम हैं, जिसके द्वारा चार आर्य सत्यों को सीधे हमारे जीवन में लागू किया जा सकता है।





संघ से ग्रांड रिपोर्ट

रेव. जेम्स ए. लिंच, जूनियर मंत्री, रिशशो कोसेइ काइ, न्यूयॉर्क

सबसे पहले और सबसे जरूरी बात, मुझे अपनी बात साझा करने का यह शानदार अवसर देने के लिए आपका धन्यवाद।

हाल ही में, मैंने अपने एक शिक्षक सहकर्मी के साथ हुए अनुभव के माध्यम से, “ऐसा कारण” और “ऐसी स्थिति” की शिक्षा पर गहराई से विचार किया।

कॉलेज प्रोफेसर के तौर पर अपने करियर की शुरुआत में, मेरा एक पर्यवेक्षक था, और हमारे बीच का रिश्ता अक्सर मुश्किल भरा रहता था। कई बार मुझे ऐसा महसूस होता था कि मुझे गलत समझा जा रहा है और मेरे साथ नाइंसाफी हो रही है, यहाँ तक कि कुछ ऐसी स्थितियाँ भी आईं जब मुझे लगा कि मेरे बारे में झूठी शिकायतें की गई हैं। समय के साथ, हमारी भूमिकाएँ बदल गईं, और आखिरकार मैं उनका पर्यवेक्षक बन गया। हालाँकि, मेरे मन में जो धारणाएँ बन गई थीं, वे यहाँ ही खत्म नहीं हो गईं; वे मेरे भीतर ही बनी रहीं।

एक समय मुझे पता चला कि मेरी जगह के लिए इस व्यक्ति पर विचार किया जा रहा है। उसी पल, मैंने पाया कि मैं तुरंत ही उनके इरादों के बारे में अपने मन में एक कहानी गढ़ने लगा हूँ। पुरानी भावनाएँ फिर से उभर आईं, और अपने पिछले अनुभवों के नज़रिए से, मैं उन्हें एक बार फिर से एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखने लगा जो बहुत हिसाब-किताब लगाने वाला था और शायद मुझे नीचा दिखाने की कोशिश भी कर रहा था। बिना यह महसूस किए, मैंने एक जीते-जागते, बदलते हुए इंसान को, अपनी ही पिछली ज़िंदगी से बनी एक तय छवि में समेट दिया था।

फिर कुछ ऐसा हुआ जिसकी उम्मीद नहीं थी। उस व्यक्ति ने मुझसे संपर्क किया और पूछा कि क्या हम अकेले में बात कर सकते हैं। थोड़ी-बहुत बातचीत के बाद, उन्होंने अपने परिवार से जुड़ी एक बेहद निजी और गंभीर समस्या के बारे में बताया, जिसका वे सामना कर रहे थे। उस पल, मैं न केवल उस स्थिति से हैरान था जिसका वे वर्णन कर रहे थे, बल्कि उस भरोसे से भी जो उन्होंने मुझ पर दिखाया था।

जैसे ही मैंने सुना, मेरे भीतर कुछ नरम हो गया। मुझे महसूस हुआ कि मेरी आँखों में हल्के-हल्के आँसू भर रहे हैं—बस इतने कि मेरी आँखें नम हो जाएँ। क्योंकि उस पल में, मैंने खुद को विनम्र और कृतज्ञ, दोनों ही महसूस किया, मानो यह पूरी स्थिति स्वयं बुद्ध ने ही रची हो—ताकि वे मुझे कुछ ऐसा दिखा सकें जिसे मैं अपनी आँखों से नहीं देख पा रहा था। मुझे एहसास हुआ कि मैंने अपने अभ्यास की सबसे बुनियादी शिक्षाओं में से एक को कितनी जल्दी भुला दिया था—कि हम एक-दूसरे

से अलग नहीं हैं। मेरे सामने जो व्यक्ति था—मेरा सहकर्मी—वह वह 'किरदार' नहीं था जिसे मैंने अपने मन में गढ़ लिया था, बल्कि वह एक इंसान था जो पीड़ा से गुजर रहा था और सहारे की तलाश में था।

अचानक, मैंने देखा कि जिस चीज़ को मैंने एक स्थिर स्थिति मान लिया था, वह असल में अभी भी बदल रही थी।

और गहराई से सोचने पर, मुझे यह समझ आने लगा कि कारण और परिस्थितियाँ न तो स्थिर होती हैं और न ही एकतरफ़ा। वे लगातार, दो-तरफ़ा बहाव में चलती रहती हैं, और हमारे रिश्तों को गड़ती व फिर से गड़ती रहती हैं। मेरी प्रतिक्रियाओं का मेरे सहकर्मी पर असर पड़ा, ठीक वैसे ही जैसे उसकी प्रतिक्रियाओं का मुझ पर पड़ा था, और वह मेरे विकास का उतना ही बड़ा कारण थी, जितना कि मैं उसके विकास का।

जिस चीज़ पर मैं प्रतिक्रिया दे रहा था, वह केवल वर्तमान क्षण नहीं था, बल्कि अतीत से बनी एक ऐसी समझ थी जिसे मैं लगातार अपने साथ आगे बढ़ाता आ रहा था।

जब मैं उन तय धारणाओं के बजाय खुले मन से स्थिति का सामना कर पाया, तो कुछ बदल गया, न केवल हमारे आपसी व्यवहार में, बल्कि मेरे अपने दिल में भी। जो स्थिति कभी मुझे बेहद मुश्किल लगती थी, जिससे मुझे अपना बचाव करना पड़ता था या जिसका विरोध करना पड़ता था, वही अब करुणा का अभ्यास करने का एक अवसर बन गई।

इस अनुभव ने मुझे याद दिलाया कि हमारा बौद्ध अभ्यास कोई अमूर्त या हमारी ज़िंदगी से अलग-थलग चीज़ नहीं है। जब हमें इस बात का एहसास होता है कि हम कारणों और परिस्थितियों पर किस तरह प्रतिक्रिया दे रहे हैं, तो हम साफ-साफ देख पाते हैं कि कैसे हम अपनी ही धारणाओं के आधार पर दूसरों को एक तय दायरे में बांधने की आदत में कितनी आसानी से फंस सकते हैं। साथ ही, दैनिक जीवन और अपने अभ्यास के माध्यम से, हमें हमेशा अलग तरह से प्रतिक्रिया देने की स्वतंत्रता भी मिलती है।

इस तरह, जीवन कोई स्थिर वास्तविकता नहीं है जिसे तयशुदा लेबल से परिभाषित किया जा सके, बल्कि यह एक जीवित प्रवाह है जिसमें हर विचार, शब्द और कर्म की भागीदारी होती है। यहाँ तक कि कठिन परिस्थितियों में भी, यदि हम जागरूकता और करुणा के साथ स्थितियों का सामना करें, तो हम न केवल अपने रिश्तों को, बल्कि उस पूरे परिवेश को भी बदलना शुरू कर सकते हैं, जिसमें वे रिश्ते पनपते हैं।



बुद्ध का चीवर पहन लें

मानवीय संबंधों में “लचीलेपन” का महत्व

निक्क्यो निवानो

रिश्शो कोसेइ काइ का संस्थापक



Founder Nikkyo Niwano and Cofounder Myoko Naganuma visit Ibaraki Prefecture in 1952 to spread the Dharma.

जब मैं इस बारे में सोचता हूँ कि आज के जापान में बहुत से लोग सबसे ज्यादा किस चीज की तलाश में हैं, तो अंततः मेरा मानना है कि वह है—आध्यात्मिक शांति और एक आंतरिक समृद्धि। इस लक्ष्य को पाने के लिए, आपसी रिश्ते ही सबसे बड़ी प्राथमिकता होती है और निश्चित रूप से, बहुत से लोग अपने आस-पास के लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखना चाहते हैं।

हम अक्सर यह मान लेते हैं कि, "मैं अपना जीवन अपने ही प्रयासों से जी रहा हूँ।" लेकिन मानव जीवन इतना सरल नहीं है।

अक्सर यह कहा जाता है कि "व्यक्ति" (人) के लिए जापानी अक्षर एक ऐसी रेखा से बना है जो दूसरी रेखा को सहारा देती है। ठीक जैसा कि इस अक्षर की बनावट से पता चलता है, एक-दूसरे के करीब आकर और एक-दूसरे को सहारा देकर ही हम वास्तव में इंसान बन पाते हैं।

संयोग से, इस अक्षर की दोनों रेखाओं की लंबाई अलग-अलग है। क्या इसका मतलब यह है कि लंबी रेखा मुख्य



जागृति के बीज अंकुरित करना

भूमिका निभाती है और छोटी रेखा सहायक भूमिका? हम ऐसा सोच सकते हैं। फिर भी, मानवीय रिश्तों की वास्तविकता यह है कि जो व्यक्ति सहायक की भूमिका निभाता हुआ प्रतीत होता है, वास्तव में उसे ही सहारा मिल रहा होता है; और जिसे सहारा मिलता हुआ प्रतीत होता है, वास्तव में वही दूसरे को सहारा दे रहा होता है। जब लोग एक-दूसरे का साथ देते हैं, तो उनके योगदान के महत्व में कोई अंतर नहीं होता।

इसलिए, यह महसूस करना बिल्कुल स्वाभाविक होना चाहिए कि, "चूँकि मेरे जीवन को इतने सारे लोगों का सहारा मिला हुआ है, तो मुझे भी इस तरह से जीना चाहिए कि मैं अपने आस-पास के लोगों का सहारा बन सकूँ।" उदाहरण के लिए, जब हम किसी की मदद कर पाते हैं, तो हमारे भीतर एक अवर्णनीय खुशी उमड़ पड़ती है। निश्चित रूप से, हर किसी ने इस तरह के आनंद का अनुभव किया होगा।

अपने आस-पास सौहार्दपूर्ण संबंधों का दायरा विस्तृत करने के लिए एक संकेत के रूप में, मैं चाहूँगा कि आप इस वाक्यांश पर चिंतन करें—"तथागत का चीवर धारण करो"—जो 'पुण्डरीक सूत्र' के "धर्म गुरु" नामक अध्याय में आता है।

यह पाठ यह समझाते हुए बताता है कि "तथागत का चीवर" क्या है: "तथागत का चीवर एक लचीला और सहनशील मन है।"

जैसा कि इस शब्द से ही पता चलता है, "लचीलापन" का अर्थ है—एक सौम्य और सामंजस्यपूर्ण हृदय। इसका मतलब कोई कठिंदार या चिड़चिड़ा मन नहीं है, जो इंसान को दूसरों का विरोध करने, उनकी आलोचना करने और उन पर ताने कसने के लिए उकसाए; बल्कि यह एक ऐसी भावना है, जो इंसान को अपने आस-पास के लोगों को गर्मजोशी से गले लगाने और जिन लोगों से भी उसका सामना होता है, उनके साथ गहरे सामंजस्य का अनुभव साझा करने में सक्षम बनाती है।

आने वाले समय में, यह मानसिकता रखने के बजाय कि हम केवल अपने ही प्रयासों से जीवित हैं, इस तथ्य के प्रति चेतना कि हमें वास्तव में सभी लोगों और सभी चीजों के कारण ही जीवन मिला है—अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाएगा। मेरा मानना है कि "जीवन प्रदान किए जाने" की यह जागरूकता, "तथागत का चीवर धारण करो" शब्दों में अभिव्यक्त होती है।

शाक्यमुनि और उनके शिष्यों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र उन कपड़ों से बनाए जाते थे, जिन्हें कब्रिस्तानों में शवों को लपेटने के बाद फेंक दिया जाता था, या फिर कूड़े के ढेरों से उठाए गए पुराने चिथड़ों से; इन कपड़ों को अच्छी तरह धोया जाता था। इनमें से जो हिस्से साबुत होते थे, उन्हें काटकर आपस में सिल दिया जाता था, और फिर लाल मिट्टी की सहायता से उन्हें गेरुआ रंग में रंगा जाता था। यह परंपरा एक ऐसी विनम्र चेतना को दर्शाती है कि हमारा जीवन इस संसार के लोगों की बदौलत ही संभव हुआ है, और हम जिन भी चीजों से जुड़े हुए हैं—उन्हीं के सहारे हमारा जीवन चलता है।

जब हम भी इस बात पर विचार करते हैं कि हमें जीवन किस चीज से मिलता है, तो हम अनिवार्य रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि हमें देवताओं और बुद्धों के साथ-साथ इस ब्रह्मांड की समस्त वस्तुओं और सभी लोगों द्वारा जीवन प्रदान किया गया है; और हम इस सत्य तक पहुँचेंगे कि विनम्रतापूर्वक यह स्वीकार करना कि हमें जीवन का उपहार मिला है और हमें जीवित रखा जा रहा है—ही सुख का सर्वोच्च मार्ग है।

जब कोई यह सोचता है कि "मुझे जीवन मिला है," तो उसके मन में शत्रुता, प्रतिद्वंद्विता या निंदा जैसी भावनाओं का जरा भी नामो-निशान नहीं रहता। उसके हृदय में केवल कृतज्ञता का भाव—बस यही कि "मैं कितना आभारी हूँ"—उमड़ पड़ता है। और जब कोई व्यक्ति ऐसा महसूस करता है, तो उसका हृदय स्वाभाविक रूप से कोमल हो जाता है। ऐसा हृदय अपने आप ही व्यक्ति के चेहरे के हाव-भाव, बोलने के ढंग और कार्यों में झलकने लगता है, जिससे उससे मिलने वाले लोगों पर एक सुखद प्रभाव पड़ता है। और यहीं से आदर्श मानवीय संबंधों का जन्म होता है।



जैसे कोई बैंगनी फूल चुपचाप खिल रहा हो

रेव. ताकासी माएदा
डायरेक्टर, रिश्शो कोसेई-काई इंटरनेशनल

सभी को नमस्कार। यह महीना शाक्यमुनि बुद्ध के जन्म का महीना है। यह कहा जाता है कि अंग्रेजी शब्द “अप्रैल” लैटिन क्रिया “अपेरिरे” से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है “खोलना”। यह वसंत ऋतु है, जब फूल खिलते हैं और जीवन अंकुरित होने लगता है। मुझे इस बात में गहरी सार्थकता महसूस होती है कि शाक्यमुनि का जन्म इसी समय हुआ था।

इस महीने के संदेश में, राष्ट्रपति निवानो बैंगनी फूल का वर्णन करते हैं, जो कि मामूली दिखने वाला फूल है, फिर भी वह मजबूती से जीवित रहता है और लोगों के हृदय को कोमल सांत्वना प्रदान करता है। आज हम उस युग में जी रहे हैं जिसमें परिणाम और पहचान बहुत जल्दी दिखाई देते हैं, और हम लगातार जल्दबाजी करते हैं, हमेशा ऊँचा लक्ष्य रखते हैं। हालांकि, बैंगनी फूल अपनी तुलना दूसरों से नहीं करता; वह चुपचाप और शांति से वहीं खिलता है, जहाँ उसे खिलना चाहिए, ठीक उसी समय जब फूलने का उचित समय होता है। हवा के झोंकों से उड़ाए जाने पर भी यह दृढ़ता से जड़ें जमाए रहता है, एक छोटी लेकिन स्थिर शक्ति दिखाता है और हमें शांत साहस प्रदान करता है। मुझे लगता है कि लोगों में एक तरह की महानता होती है, जब रोजमर्रा की जिंदगी में दूसरों के लिए चुपचाप खुद को समर्पित कर देते हैं।



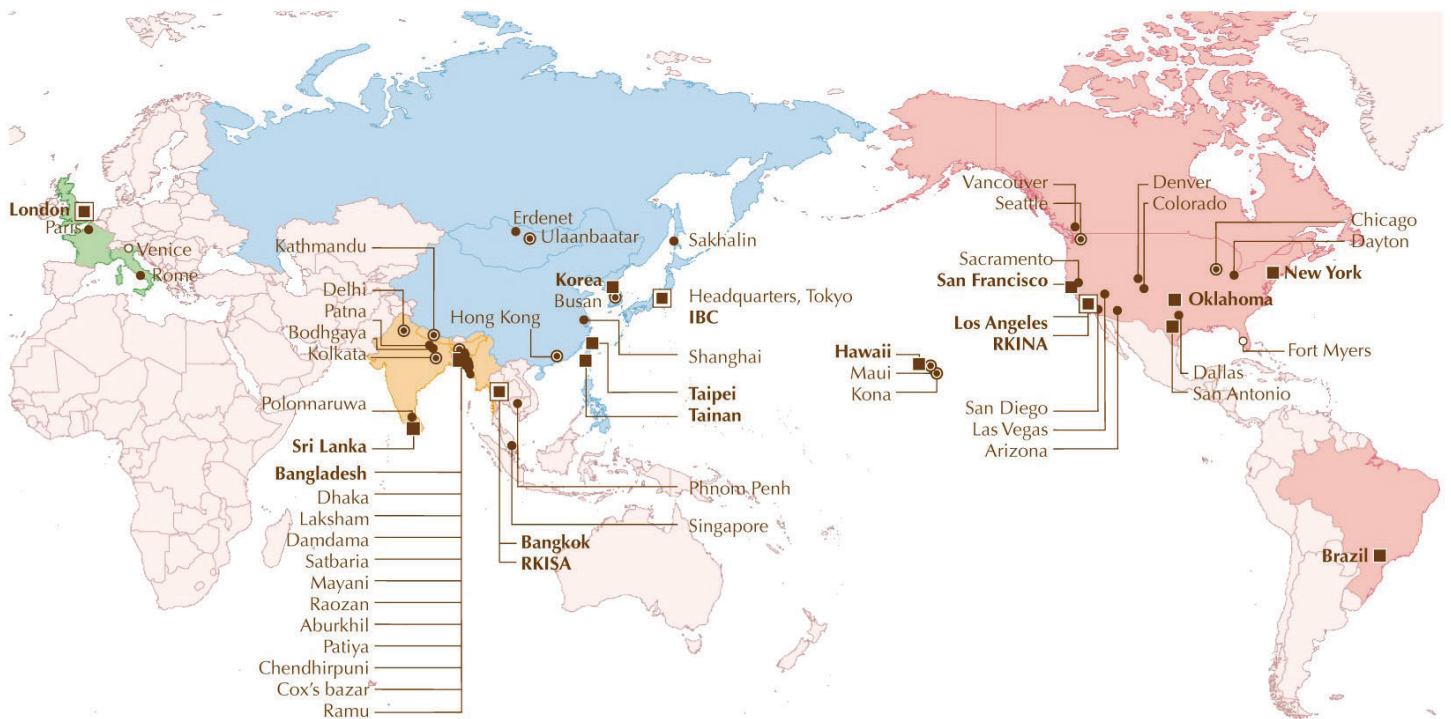
3月12日、大聖堂での体験説法のためスリランカ教会から来日されたデルゴダ・スワルナ・パドミニさん(前列中央)を国際伝道部のオフィスお迎えして(前列左が前田部長)

Rissho Kosei-kai International

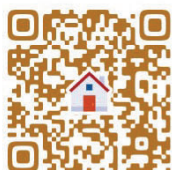
Make Every Encounter Matter



🌸 A Global Buddhist Movement 🌸



Information about local Dharma centers



facebook



X



✉ We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp